महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में हुआ था । उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रयाग में हुई । प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयत्न किए । सन् 1987 में उनका देहांत हो गया ।

महादेवी जी छायावाद के प्रमुख कवियों में एक थीं । 'नीहार', 'रश्मि', 'यामा', 'दीपशिखा' उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं । कविता के साथ-साथ उन्होंने सशक्त गद्य रचनाएँ भी की हैं, जिनमें रेखाचित्र तथा संस्मरण प्रमुख हैं । 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'शृंखला की कड़ियाँ' उनकी महत्त्वपूर्ण गद्य रचनाएँ हैं । महादेवी वर्मा को साहित्य अकादमी, भारत भारती एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया । भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया ।

महादेवी वर्मा की साहित्य साधना की पृष्ठभूमि में एक ओर आजादी के आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी है । यही कारण है कि उनके काव्य में जागरण की चेतना के साथ स्वतंत्रता की कामना की अभिव्यक्ति है और दुख की अनुभूति के साथ करुणा बोध भी । दूसरे छायावादी कवियों की तरह महादेवी वर्मा के प्रगीतों में भक्तिकाल के गीतों की प्रतिध्वनि है और लोकगीतों की अनुगूँज भी, किंतु इन दोनों के साथ उनके गीतों में आधुनिक बौद्धिक मानस के द्वंद्वों की अभिव्यक्ति ही प्रमुख है ।

महादेवी वर्मा के गीत अपने विशिष्ट रचाव और संगीतात्मकता के कारण अत्यंत आकर्षक हैं । उनमें लाक्षणिकता, चित्रमयता और बिंबधर्मिता है । महादेवी ने नए बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से प्रगीतों की अभिव्यक्ति को नया रूप दिया । उनकी काव्यभाषा प्रायः तत्सम शब्दों से निर्मित है ।

'मैं नीर भरी दुख की बदली' महादेवी के कविता संग्रह 'यामा' से संकलित है । कवयित्री के लिए व्यक्तिगत अभावों से पैदा होने वाला दुख इतना मूल्यवान और स्पृहणीय हो जाता है कि वे उसकी निरंतरता की कामना करती हैं और अपने को नीर भरी दुख की बदली कहती हैं । बदली जल से भरी होती है । बदली का जल अपने लिए नहीं होता, सृष्टि के लिए होता है । वह तप्त विश्व को नहलाती है । बदली विश्व के लिए जल लेकर आती है और पूरे आकाश में छा जाती है । लगता है पूरा आकाश उसका अपना है, किंतु जल बरसाकर उसका समूचा अस्तित्व समाप्त हो जाता है । उसी तरह करुणाशील व्यक्ति भी संसार में करुणा का जल लेकर आता है और उसे संतप्त हृदय पर बरसाता है । उसका अपना कोई निजी सुख-दुख नहीं होता । वह तो दूसरों के सुख-दुख में खुद को शामिल कर अपने को बाँटता है । नभ में उसका अपना कोई कोना भले न हो, किंतु जहाँ कहीं हरीतिमा का उल्लास और सौंदर्य है, वह वहाँ मौजूद है, व्याप्त है । इस कविता में ध्वनित दुख या करुणा की यही दिशा है ।

मैं नीर भरी दुख की बदली

स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली !

मेरा पग-पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली !

मैं क्षितिज-भृकुटी पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन-अंकुर बन निकली !

पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अंत खिली !

विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली !

अभ्यास

कविता के साथ

1. महादेवी अपने को 'नीर भरी दुख की बदली' क्यों कहती हैं ?
2. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें -
   (क) मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
   चिंता का भार बनी अविरल,
   रज-कण पर जल-कण हो बरसी
   नव-जीवन अंकुर बन निकली !
   (ख) सुधि मेरे आगम की जग में
   सुख की सिहरन हो अंत खिली !
3. 'क्रंदन में आहत विश्व हँसा' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है ?
4. कवयित्री किसे मलिन नहीं करने की बात करती हैं ?
5. सप्रसंग व्याख्या करें -
   'विस्तृत नभ का कोई कोना
   मेरा न कभी अपना होना
   परिचय इतना इतिहास यही
   उमड़ी कल थी मिट आज चली ।
6. 'नयनों में दीपक से जलते' में 'दीपक' का क्या अभिप्राय है ?
7. कविता के अनुसार कवयित्री अपना परिचय किस रूप में दे रही हैं ?
8. 'मेरा न कभी अपना होना' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है ?
9. कवयित्री ने अपने जीवन में आँसू को अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन माना है । कैसे ? स्पष्ट कीजिए ।
10. इस कविता में 'दुख' और 'आँसू' कहाँ-कहाँ, किन-किन रूपों में आते हैं ? उनकी सार्थकता क्या है ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. इस कविता से मिलते-जुलते भावों की अन्य कविताओं का संग्रह करें ।
2. महादेवी वर्मा की कविता व्यक्तिगत सुख-दुख की सीमा से ऊपर उठकर पूरे विश्व के सुख-दुख को अपने में समाहित कर लेती है, इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?
3. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' भी कहा जाता है । इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

4. महादेवी कविता के अलावा चित्रांकन भी करती थीं, उन्होंने उत्कृष्ट गद्य भी लिखा है । उनके कुछ चित्र और गद्य रचनाएँ एकत्र करें ।

भाषा की बात

1. प्रस्तुत कविता से तत्सम शब्दों को छाँटिए और उनके स्वतंत्र वाक्य प्रयोग कीजिए ।
2. निम्नांकित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए –
   नयन, संगीत, निर्झरिणी, निस्पंद
3. निम्नांकित शब्दों के वाक्य बनाते हुए लिंग-निर्णय करें –
   सुख, दीपक, चिंता, पथ, श्वास
4. निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची बताएँ –
   नभ, विश्व, नव, नयन
5. निम्नांकित शब्दों के विलोम रूप लिखें –
   जीवन, सुख, विस्तृत, अपना, आज

शब्द निधि

नीर	:	जल (यहाँ आँसू के अर्थ में)	मलय-बयार	:	दक्षिणी पवन
बदली	:	बादल	क्षितिज-भृकुटी	:	दिगंत रूपी भौहें
स्पंदन	:	कंपन	धूमिल	:	मलिन
क्रंदन	:	रोना, रुदन	अविरल	:	निरंतर, लगातार
आहत	:	घायल	रज-कण	:	धूलि कण
निर्झरिणी	:	झरना का छोटा रूप	सुधि	:	याद, स्मृति
स्वप्न-पराग	:	स्वप्न रूपी पुष्प की धूलि	आगम	:	आना
दुकूल	:	दुपट्टा			

हरिवंशराय बच्चन

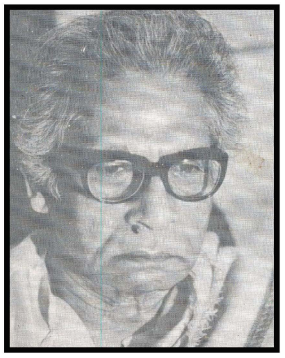

हरिवंशराय बच्चन का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद शहर में 27 नवंबर 1907 ई० को हुआ था । 'बच्चन' माता-पिता द्वारा प्यार से दिया गया नाम था जिसे इन्होंने अपना उपनाम बना लिया । बच्चन जी कुछ समय तक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहने के बाद भारतीय विदेश सेवा में चले गए थे । उस दौरान इन्होंने कई देशों का भ्रमण किया और मंच पर ओजस्वी वाणी में काव्यपाठ के लिए विख्यात हुए । बच्चन जी की कविताएँ सहज और संवेदनशील हैं । इनकी रचनाओं में व्यक्ति-वेदना, राष्ट्र-चेतना और जीवन-दर्शन के स्वर मिलते हैं । इन्होंने आत्मविश्लेषण वाली कविताएँ भी लिखी हैं । राजनैतिक जीवन के ढोंग, सामाजिक असमानता और कुरीतियों पर इन्होंने तीखे व्यंग्य किए हैं । कविता के अलावा बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा भी लिखी, जो हिंदी गद्य की बेजोड़ कृति मानी गई । 2003 ई० में मुंबई में इनका निधन हुआ ।

बच्चन जी की प्रमुख कृतियाँ हैं - 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'मिलन-यामिनी', 'आरती और अंगारे', 'टूटती चट्टानें', 'रूप तरंगिनी' (सभी कविता संग्रह) और आत्मकथा के चार खंड - 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' तथा 'दशद्वार से सोपान तक'।

बच्चन जी साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और सरस्वती सम्मान से सम्मानित हुए ।

प्रस्तुत कविता 'आ रही रवि की सवारी' बच्चन जी के कविता संकलन 'निशा-निमंत्रण' से ली गई है । इन्होंने यह कविता अपनी प्रथम पत्नी श्यामा देवी की मृत्यु के बाद लिखी थी । युग-जीवन की निराशा को मस्ती में रूपांतरित कर लेनेवाले बच्चन जी के व्यक्तिगत जीवन में जब वह घटना घटी तो फिर वह मधु के गीत नहीं गा सके । धीरे-धीरे बच्चन निष्क्रियता की परिधि से बाहर निकले तो एक दिन अनायास कविता की पंक्ति उनके अंतर से फूट निकली । यह निशा-निमंत्रण की पहली पंक्ति थी और साथ ही कवि का अपनी काव्ययात्रा के दूसरे चरण में प्रवेश । निशा-निमंत्रण में बच्चन की काव्य प्रतिभा का विस्फोट हुआ है । 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' से निशा के आगमन की व्यथा-कथा शुरू होती है और जैसे-जैसे निशा गहराती है, अवसाद बढ़ता जाता है । फिर भोर में आशा की पहली किरण फूटती है और कुछ देर बाद क्षितिज पर संभावनाओं का सूरज झाँकता दिखाई देता है । यह सूर्य बच्चन के जीवन का नया सूर्य तो है ही, साथ ही राष्ट्रीय जीवन में स्वाधीनता और नवनिर्माण का सूर्य भी है ।

आ रही रवि की सवारी

नव-किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी ।
आ रही रवि की सवारी !

विहग बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी !
आ रही रवि की सवारी !

चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह
रात का राजा खड़ा है राह में बनकर भिखारी !
आ रही रवि की सवारी !

अभ्यास

कविता के साथ

1. 'आ रही रवि की सवारी' कविता का केंद्रीय भाव क्या है ?
2. कवि ने किन-किन प्राकृतिक वस्तुओं का मानवीकरण किया है ?
3. 'आ रही रवि की सवारी' कविता में चित्रित सवारी का वर्णन करें !
4. भाव स्पष्ट कीजिए -
   चाहता, उछलूँ विजय कह,
   पर ठिठकता देखकर यह
   रात का राजा खड़ा है राह में बनकर भिखारी !
5. रवि की सवारी निकलने के पश्चात प्रकृति उसका स्वागत किस प्रकार से करती है ?
6. रात का राजा भिखारी कैसे बन गया ?
7. इस कविता में रवि को राजा के रूप में चित्रित किया गया है । अपने शब्दों में यह चित्र पुनः स्पष्ट कीजिए ।
8. कवि क्या देखकर ठिठक जाता है और क्यों ?
9. सूर्योदय के समय आकाश का रंग कैसा होता है – पाठ के आधार पर बताएँ ।
10. 'चाहता उछलूँ विजय कह' में कवि की कौन-सी आकांक्षा व्यक्त होती है ?
11. राह में खड़ा भिखारी किसे कहा गया है ?
12. 'छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी' का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें !

कविता के आस-पास

1. बच्चन की कुछ अन्य प्रमुख कविताएँ संकलित कीजिए ।
2. 'आ रही रवि की सवारी' कविता को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए ।
3. बच्चन की कविता 'आ रही रवि की सवारी' जीवन को नया संदेश देती है; आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है । इसी भाव की अन्य कविताओं को उपलब्ध कर पढ़ें ।
4. हरिवंश राय बच्चन के ज्येष्ठ पुत्र और हिंदी सिनेमा के प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन ने 'मधुशाला' को गाया है । उसका कैसेट उपलब्ध करें और यह जानने की कोशिश करें कि कविता कैसे पढ़ी जाए ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   रवि, किरण, कुसुम, स्वर्ण, विहग, रात

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –
   सवारी, कलि, पोशाक, मैदान, फौज, भिखारी
3. कविता में प्रयुक्त उपमानों को चुनें ।
4. कलि-कुसुम और कीर्ति-गायन में कौन-सा समास है ?
5. कविता में आए देशज और विदेशज शब्दों को चुनें ।
6. निम्नलिखित पंक्तियों से विशेषण चुनें –
   नवकिरण का रथ सजा है,
   कलि-कुसुम से पथ सजा है
   बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी !
7. 'विहग बंदी और चारण' में कौन-सा अलंकार है ?
8. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखें -
   किरण, कलि, पोशाक, सवारी
9. यह कविता एक रूपक है । रूपक अलंकार के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी हासिल करें तथा उनसे यह जानकारी लें कि इस कविता में रूपक का क्या स्वरूप है ?

शब्द निधि

अनुचर	:	दास या सेवक
विहग	:	पक्षी
बंदी/चारण	:	राजा की स्तुति का गान करनेवाले
तारक	:	सितारा, तारा
ठिठकना	:	रुक-रुक कर जाना
स्वर्ण	:	सोना
रवि	:	सूर्य
कीर्ति	:	यश
फौज	:	सेना
विजय	:	जीत